IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

साहित्यकार जयशंकर प्रसाद का नाटकों में योगदान

श्रीमती सुमित्रा
एम.ए.नेट हिन्दी

प्रस्तावनाः–

जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिंदी नाट्य साहित्य के प्रमुख नाटककार है।प्रसाद जी की नाट्यकृतियाँ पौराणिक युग से लेकर हर्षवर्धन युग तक के भारतीय इतिहास के स्वर्णिम एवं गौरवमय कालखंड पर आकृति है तथा इन सभी कृतियों में भारतीय संस्कृति की शक्ति, समृद्धि एवं औदात्य का भास्वर चित्र प्रस्तुत किया गया है। प्रसाद जी नाटककार के साथ वे कवि, कहानीकार, उपन्यासकार तथा निबन्धकार भी थे। प्रसाद जी हिंदी साहित्य की छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक है। हिंदी नाटक का इतिहास जयशंकर प्रसाद के नाटकों के बिना अधूरा कहा जाएगा। भारतेंदु हरिश्चंद्र के बाद प्रसाद जी ऐसे नाटककार थे, जिन्होंने स्वतंत्रता के पहले के हिंदी नाटक को गति प्रदान की। उन्होंने हिंदी नाटक की एक अलग धारा का निर्माण किया। प्रसाद के नाटकों में भारत की संस्कृति और इतिहास के दर्शन के साथ ही दर्शन के साथ परिस्थितियों और समस्याओं की झलक मिलती है। प्रसादजी के नाटक अतीत के पट पर वर्तमान का चित्र प्रस्तुत करने वाले ऐसे नाटक। हैं, जिनमें कथानक भले ही इतिहास से लिया गया हो पर उनमें वर्तमान समस्याओं को ही प्रस्तुत किया गया है। राष्ट्रीयता की भावना, अतीत, गौरव, आदर्श, नारी पात्रो की परिकल्पना, सामाजिक समस्याओं की अभिव्यक्ति, उदात्त मानवीय मूल्यों की स्थापना, प्रसाद जी के नाटकों की मूल विशेषताएं हैं। इन सभी कर्तव्यों में भारतीय संस्कृति की शक्ति समृद्धि एवं औदात्य का भास्वर प्रस्तुत किया गया है। यह रचना उस समय की है जब देश में गाँधी जीके नेतृत्व में स्वतंत्रता आन्दोलन चलाया जा रहा था और प्रत्येक देशवासी के ह्रदय में स्वतंत्रता एवं राष्ट्रीयता की भावना विद्यमान थी। प्रसाद जी ने अपने नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जागृत की तथा भारत के अतीत गौरव का गान कर देश के नौजवानों को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। काव्य की दृष्टि से उनके नाटक आज भी प्रासंगिक है। इस कारण देशभर की नाट्य संस्थाओं के साथ ही महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में प्रसाद के नाटकों का मंचनीय प्रदर्शन होता रहता है।

जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचयः–

- प्रसिद्ध नाटककार जयशंकर प्रसाद का जन्मदिन 30 जनवरी 1880 को काशी के प्रसिद्ध और समृद्ध सुंघनी साहू परिवार में हुआ। उनके परिवार में कलाकारों को काफी समान व दान देने की परंपरा थी। प्रसाद जी का आरंभिक जीवन काफी कष्ट में रहा। लगभग 11 वर्ष की आयु में ही प्रसाद जी के पिता, 15 वर्ष की आयु में माता जी और 17 वर्ष की आयु में ही बड़े भाई का देहांत हो गया था। इस

प्रकार किशोरावस्था में ही प्रसादजी पर पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ आ पड़ा। उनके रिश्तेदारों ने उनकी संपत्ति भी हड़पने की कोशिश की किंतु प्रसाद जी ने अत्यंत धैर्य और गंभीरता से जीवन की घटनाओं का सामना किया। प्रसाद जी की आरंभिक शिक्षा अल्प समय तक काशी के प्रतिष्ठित क्वींस कॉलेज में हुई। उसके बाद उन्होंने मोहिनीलाल लाल गुप्त, रसमय सिद्ध, गोपाल बाबा, श्री दीनबंधु, ब्रह्मचारी, हरिहर महाराज, महामहोपाधयाय, पंडित देवी प्रसाद शुक्ल जैसे शिक्षकों, काव्य गुरु और संस्कृत के प्रकांड विद्वानों के सांनिध्य में वेद, उपनिषद्, इतिहास और पुराण का अध्ययन करते हुए संस्कृत और हिंदी भाषा पर अपना अधिकार बनाया। कहा जाता है कि घर के साहित्यिक माहौल के कारण ही जयशंकर प्रसाद ने केवल नौ वर्ष की आयु में ही कलाधर नाम से ब्रज भाषा में एक पद की रचना कर ली थी। उनका तीन बार विवाह हुआ था पहली दो पत्नियाँ बिना संतान के ही क्षय रोग के कारण जल्द ही मृत्यु को प्राप्त हो गई। पारिवारिक दबाव के कारण उनको तीसरा विवाह करना पड़ा और तीसरी पत्नी से पुत्र रत्नशंकर प्रसाद की प्राप्ति हुई। यह उनके एकमात्र संतान थे। क्षय रोग के कारण ही 15 नवंबर 1937 को जयशंकर प्रसाद जी का देहांत हो गया। जयशंकर प्रसाद जी की स्मृति में वर्ष 2011 में महाकवि जयशंकर प्रसाद फाउंडेशन की स्थापना भी की गयी और इनका प्रमुख कार्यालय भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित है।

जयशंकर प्रसाद का साहित्य में योगदानः–

जयशंकर प्रसाद ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन किया। प्रसाद जी आधुनिक हिंदी कविता के छायावादी युग की शुरुआत करने वाले माने जाते हैं। काव्य रचना के साथ ही उन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध जैसे साहित्यिक रूप में अपनी उत्कृष्ट सर्जनात्मकता का परिचय दिया। जयशंकर प्रसाद द्वारा साहित्य की विभिन्न विद्याओं में रचित साहित्य निम्न प्रकार से है1.काव्य2.उपन्यास3.कहानी4.नाटक। जिनका उल्लेख निम्नानुसार है।

1 काव्य :–

जयशंकर प्रसाद ने अपनी काव्य यात्रा की शुरुआत चित्राधर नामक काव्य एक संग्रह से की है। इस संग्रह में ब्रज भाषा और खड़ी बोली की रचनाएं संकलित की थी। कानन कुसुम संग्रह में विभिन्न भावो से संबंधित प्रसाद की प्रारंभिक कविताएं संकलित हैं। प्रेम प्रतीक में प्रेम और प्रकृति का महत्त्व बताते हुए प्रसाद जी ने सर्वहित और समभाव की कामना की है। प्रसाद के झरना काव्य का भी संग्रह से छायावादी कविता का आरंभ माना जाता है। झरना में प्रयुक्त प्रेम के विविध रूप, भक्ति, अध्यात्म, रहस्यात्मक प्रकृति संबंधी, गीतात्मक कविताएँ हैं। आंसू प्रसाद द्वारा रचित विरह काव्य जिसमें कवि ने व्यक्तिगत सुख दुखों से ऊपर उठकर अपने आप को विश्व के लिए समर्पित कर देने का भाव व्यक्त किया है। कामायनी जयशंकर प्रसाद की ही नहीं बल्कि समूचे आधुनिक हिंदी काव्य का श्रेष्ठ महाकाव्य है। काव्य– शिल्प तथा भाषा की दृष्टि से भी प्रसाद जी के आंसू की गिनती हिन्दी के प्रमुख विरह काव्यों में होती है। महाराणा का महत्त्व महाराणा प्रताप और अमर सिंह पर केंद्रित का भी है, जिसमें स्वाधीनता प्रेम का उदास भाव व्यक्त हुआ है। लहर में प्रेम प्रकृति, आत्मनिवेदन, रहस्यात्मकता से संबंधित कविताओं के साथ ही तीन लंबी कविताएं भी शामिल है, जिनके नाम प्रलय की छाया, शेर सिंह का शस्त्र समर्पण और अशोक की चिंता ये तीनों ही कविताएँ ऐतिहासिक आख्यानों से संबंधित है।

2 उपन्यासः–

जयशंकर प्रसाद ने तीन उपन्यासों की मुख्यतः रचना की है। कंकाल, तितली और इरावती उपन्यास उनके निधन के कारण पूरा नहीं हो पाया। कंकाल उपन्यास के कथा के केंद्र में धार्मिक स्थल है। उपन्यास में विभिन्न धर्मों मे धार्मिक कार्यों के नाम पर होने वाले पाखंडों और अनैतिक कार्यों का चित्रांकन किया गया है। प्रसाद का तितली उपन्यास ग्राम सुधार से संबंधित है। इसमें जिम्मेदारी प्रथा के कुप्रभाव और किसानों की समस्याओं का यथार्थ चित्रण प्रसादजी ने किया है तथा तितली उपन्यास में प्रसाद जी के समाज सबंधित विचार व्यक्त किए है। इरावती उपन्यास की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है। शूंगकाल के अग्निमित्र और पुष्यमित्र को केंद्र में रखकर प्रसाद जी ने यह उपन्यास लिखना शुरू किया था लेकिन उनकी असामयिक मृत्यु के कारण यह उपन्यास अधूरा ही रह गया।

3 कहानीः–

जयशंकर प्रसाद ने कहानी साहित्य में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जयशंकर प्रसाद जी द्वारा लिखित कहानियों की संख्या लगभग 70 के आसपास मानी जाती है, जिनमें प्रमुख कहानियाँ पांच कहानी संग्रह में संकलित की गई है। छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी, इंद्रजाल, ग्राम को प्रसाद जी की पहली कहानी माना जाता है। और उन में इन कहानियों में अलग अलग प्रकार की पृष्ठभूमि वाली कहानियाँ लिखीं और सभी कहानियों में मानव हृदय के विभिन्न स्वरूप देखने को मिलते हैं।

4 नाटकः–

जयशंकर प्रसाद ने हिंदी साहित्य को अपने श्रेष्ठ नाटकों से संबंध किया है। इनके नाटकों के बारे में। हिंदी साहित्य की आधुनिक काल की शुरुआत में नाटक के नाम पर विभिन्न प्रदेशों में लोकनाट्य थे। इनके अलावा विशुद्ध मनोरंजन की दृष्टि से। आर सी। नाटक कंपनियों द्वारा नाटक खेले जाते थे। उस समय की फारसी कंपनियों के नाटकों में साहित्यिकता और सुरुचि संपन्नता न के बराबर थी। ऐसी स्थिति में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने संस्कृत नाट्य परंपरा, प्रादेशिक लोक नाट्य और कुछ सीमा तक पाश्चात्य नाट्य प्रतिनिधियों से प्रेरणा और प्रभाव ग्रहण करते हुए हिंदी। मैं नाटक लिखने वालों ने मंचित करने की सवस्थ शुरुआत की।

जयशंकर प्रसाद का नाट्य चिंतनः –

जयशंकर प्रसाद जी एक सजग नाटककार थे। उन्होंने श्रेष्ठ नाटकों की रचना के साथ ही नाटकों के सैद्धांतिक पक्ष पर भी चिंतन मनन किया। प्रसाद ने नाटक के संबंध में अपनी मान्यताओं का उल्लेख स्वलिखित निबंधों में किया है। ये सभी निबंध उनके काव्य और कला तथा अन्य निबंध नामक पुस्तक में संकलित है। साथ ही साथ प्रसाद द्वारा तेरहवें हिंदी साहित्य सम्मेलन में पढ़ें गए लेख हिंदी में नाटक का स्थान से भी उनकी नाटक संबंधी विचारों का पता चलता है। जयशंकर प्रसाद ने दृश्यकाव्य अर्थात नाटक को साहित्य का गौरवपूर्ण अंग माना है। दृश्य और श्रव्य कलाओं के समायोजन के कारण प्रसाद नाटक को एक संपूर्ण कला मानते हैं। नाटक में काव्या के दोनों भेद दृश्य और श्रव्य तथा कला की दृष्टि से मूर्त और अमूर्त रूपों का प्रयोग हुआ है। नाटक को साहित्य की विशिष्ट विद्या भी कहा जाता है। कला पक्ष केवल नाटक रूप में लोकोत्तर चमत्कार और आदर्श दृश्य तथा श्रव्य व मूर्त और अमूर्त इत्यादि सब साधनों

से वह मानसिक संसार को विकास देता है। और उसके पास साधन भी प्रचुर परिणाम है, शिल्प, संगीत, चित्र, कविता भाव और अंग– भगी से अभिनय पूर्ण होता है। एक नाटक में इन सभी का विलाश है विकास है। जयशंकर प्रसाद ने भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र के साथ ही प्राचीन शास्त्र शास्त्रीय ग्रंथों का गहराई से अध्ययन किया। इसलिए उनकी नाट्य संबंधी मान्यताएँ प्राचीन साहित्य आचार्यों की काव्येषु नाटकं रम्यं उक्ति का ही समर्थन करती है, जिसका तात्पर्य है कि काव्य अर्थात् साहित्य के सभी रूपों में नाटक सबसे अधिक रमणीय है। नाटकों में रस का प्रयोग नामक निबन्ध में वे लिखते हैं, जैसे विषयों के भीतर से विश्व आत्मा की अभिव्यक्ति होती है, उसी तरह नाटकों से रस की।

जयशंकर प्रसाद के नाटकः–

हिंदी साहित्य की आधुनिक काल की शुरुआत में नाटक के नाम पर विभिन्न प्रदेशों के लोकनाट्य थे। इसके अलावा विशुद्ध मनोरंजन की दृष्टि से फारसी नाटक कंपनियों द्वारा नाटक खेले जाते थे। उस समय की फर्जी कंपनियों के नाटकों में साहित्यिकता और सुरुचि सम्पन्नता न के बराबर थी। ऐसी स्थिति में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने संस्कृत नाट्य परंपरा, प्रादेशिक लोक नाट्यों और कुछ सीमा तक पाश्चात्य नाट्य पद्धतियों से प्रेरणा और प्रभाव ग्रहण करते हुए हिंदी में नाटक लिखने और उन्हें मंचित करने की शुरुआत की। भारतेंदु और उनके सहयोगियों ने नाटकों की कथावस्तु को तत्कालिक युग की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिस्थितियों से जोड़ते हुए विदेशी शासन और रुढियों में जकड़ी जनता को जागरूक करने की कोशिश की। इस युग राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक वैभव, सामाजिक समस्याओं से संबंधित नाटक लिखे गए। हिंदी नाटकों की ये परंपरा अब भारतीय हिंदू हरिश्चंद्र की मृत्यु के बाद धीमी पड़ गयी। द्विवेदी युग में कुछ समाज सुधारात्मक और उपदेशात्मक नाटक अवश्य लिखे गए किन्तु उनका मंचन बहुत ही कम हुआ। जयशंकर प्रसाद अपने पूर्व की नाट्य परंपरा से भलीभाँति परिचित थे। इसलिये प्रसाद जी ने अपने कई नाटकों में लंबी लंबी भूमिकाएं लिखी। इन भूमिका ओं में उन्होंने नाटकों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उसमें आए काल्पनिक प्रसंगों की ओर संकेत किया ताकि दर्शक पाठक नाटक की विषयवस्तु और उनके उद्देश्य को भलिभांति से क्षमता के। से समझ सके।

जयशंकर प्रसाद के नाटकों का संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है। इनके नाटकों की शुरूआत नाट्य यात्रा उर्वशी चंपूशैली से शुरू होकर धुर्वस्वामिनी नाटक तक पहुंचती है।

जयशंकर प्रसाद के नाटक निम्न है उर्वशी 1908 ई.,सज्जन 1910 ईस्वी, प्रायश्चित 1912 ईस्वी, कल्याणी परिणय 1912ई, करुणालय 1913 ई, राजश्री 1915 ई संशोधित संस्करण 1927 ई, विशाख 1921 ई, आजातशत्रु 1922 ईस्वी, जनमेजय का नागयज्ञ 1923 ई,कामना 1923–24 ईसवी, स्कंदगुप्त 1928 ई, एक घूंट1928 ई.,चंद्रगुप्त 1931 ई. ,ध्रुवस्वामिनी 1933 ईस्वी प्रमुख नाटक देखने को मिलते है।

जयशंकर प्रसाद के नाटकों का उल्लेख निम्नानुसार हैः –

- **उर्वशी** (1908):–चंपूकाव्य को प्रसाद ने अपनी बाल्य रचना कहा है।चंपू नाटक का ही एक प्रकार होता है जिसमें गद्य पद्य संवाद होती है। पांच परिच्छेदों में विभाजित उर्वशी में काव्यात्मक संवादों में व्रजभाषा, जबकि गद्यात्मक संवादों में खड़ी बोली का प्रयोग प्रसाद जी ने किया है। उर्वशी में प्रेम का महत्त्व स्थापित किया गया है। नाट्य शिल्प की दृष्टि से ये कमजोर रचना है।
- **सज्जन** (1910ई):– यह नाटक पांच दृश्यों में विभाजित नाटक है। इसमें युधिष्ठिर की धर्मनिष्ठा और स्वतंत्रता को दर्शाया गया है। कौरवों द्वारा वन विहार करते समय गंधर्वों से हुए युद्ध और उनसे मिली हार इस नाटक की कथावस्तु के केंद्र में है। उसके बाद पांडवों द्वारा उन्हें बचाया जाना और युधिष्ठिर द्वारा छोड़ दिया जाना चित्रित है। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, द्रौपदी, दुर्योधन, दुशासन, करण, शकुनी आदि इस नाटक के पात्र हैं।
- **प्रायश्चित** (1912ई) :– प्रायश्चित नाटक को छःदृश्यो में दर्शाया गया है। इसमें जयचंद द्वारा पृथ्वीराज चौहान के साथ किया गया छल इस नाटक की कथावस्तु का मूल आधार है। जयचंद के राष्ट्रद्रोह के प्रायश्चित के रूप में आत्म वध को उचित ठहराया गया तथा राष्ट्र प्रेम का महत्त्व स्थापित किया गया। नाट्य शिल्प की दृष्टि से प्रायश्चित पर फारसी रंगमंच की शैली का थोड़ा प्रभाव है। इस नाटक की भाषा प्रसाद के पहले नाटकों से श्रेष्ठ है। जयचंद, मंत्री, सेनापती, मोहम्मद गौरी, शफकत आदि इस नाटक के प्रमुख पात्र हैं।
- **कल्याणी परिणय** (1912 ईस्वी) :– यह नाटक नौ दृश्यों में विभाजित है। चाणक्य के मार्गदर्शन निर्देशन में चंद्रगुप्त की ग्रीक सेना पर विजयी अभियान के दृश्य से नाटक की शुरुआत होती है और सफलता की ओर बढ़ रही चंद्रगुप्त का मन अवसाद से घिरा हुआ है। सिल्यूकस की पुत्री कार्नेलिया को भारत भूमि और चंद्रगुप्त दोनों से प्रेम हो गया। अंततः ग्रीक सेना के साथ हुई संधि के रूप में चन्द्रगुप्त और कार्नेलिया का विवाह संपन्न हो जाता है। इस नाटक में चाणक्य, चंद्रगुप्त, इन्दुशर्मा चंडविक्रम, सेल्यूकस, कार्नेलिया, मेगस्थनीज आदि नाटक के प्रमुख पात्र हैं।
- **करुणालय** (1913) :–यह एक गीति नाट्य शास्त्र है और यह नाटक पांच दृश्यों में विभाजित हैं पुरुष पात्रो में हरिश्चन्द्र, रोहित वशिष्ठ, विश्वामित्र, शुनरु शेफ, शक्ति, मधुच्छन्द तथा स्त्रीपात्रों मे तारिणी सुव्रता है । इस नाटक की कथावस्तु का आधार विश्वामित्र और शुनःशेष की पौराणिक कथा है, जिसमें हरीशचंद्र अयोध्या के महाराज और रोहित युवराज है। यज्ञ में बलि के लिए रोहित वन में पशु ढूंढने के लिए जाता है और वहाँ अजीगर्त सौ गायों के लालच में अपने मध्यम पुत्र शून्य शेष को बलि के लिए दे देता है। शुनःशेष की बलि के समय विश्वामित्र प्रकट होकर बलि क्रम को रुकवाता है और शुनः शेष वास्तव में विश्वामित्र और सुव्रता का ही पुत्र। है। परिस्थितियों के कारणों में अजीगर्त के पास था। इस पौराणिक कथा के माध्यम से यह नाटक में नरबलि के विरुद्ध करुणा और आनंद का महत्त्व बतलाया गया है।

❖ **राजश्री** 1915 ई :–यह नाटक 1915 में लिखा गया जिसका संशोधित संस्करण 1927 में हुआ और यह चार अंकों और 22 दृश्यों में विभाजित है। नाटक की भूमिका में प्रसाद ने इसकी कथावस्तु का आधार संस्कृत के कवि बाणभट्ट द्वारा लिखित हर्ष चरित्र और चीनी यात्री सुएनच्वांग के ग्रंथों में वर्णित घटनाओं को बतलाया है। इस नाटक में वर्धन वंश की कन्या और कन्नौज राजपाल गृह वर्मा की रानी राज्यश्री नाटक के केंद्र में है। अति सौंदर्य की स्वामिनी कन्नौजराज गृहवर्मा की रानी राजश्री को प्राप्त करने के लिए मालवराज देव गुप्त गौड़ के पिता की मदद से कन्नौज पर आक्रमण कर देता है। और युद्ध में गृह वर्मा मारे जाते हैं और राजश्री को बंदी बना लिया जाता है। राजश्री का भाई राज्यवर्धन अपनी बहन को मुक्त कराने के लिए मालव पर आक्रमण करता है, जिसमें देवगुप्त मारा जाता है। शांतिदेव के नाम से भिक्षु बना विकटघोष से राज्यश्री का अपहरण करवा देता है। साथ ही राज्यवर्धन को चंगुल में फंसाकर उसकी हत्या करवा देता है। उसके बाद हर्षवर्धन अपनी बहन को खोजने के लिए अभियान चलाता है। उसे सफलता भी मिलती है। इन सभी स्थितियों से आहत राजश्री आत्मदाह की कोशिश करती है। अंततः हर्षवर्धन द्वारा लोक सेवा के संकल्प पर नाटक समाप्त है। होता है। साथ ही इस नाटक में जातिगत भेदभाव, उंच, नीच, छुआछूत जैसी समस्याओं को भी दिखाया गया है। राजश्री के अलावा स्थाणीश्वर के राजकुमार, राज्यवर्धन, हर्षवर्धन शशांक, दिवाकरमित्र नामक महात्मा, गौड़ का राजा नरेंद्र गुप्त,मालवराज देवगुप्त, मालिनी सुरमा, विकटघोष आदि इस नाटक के प्रमुख पात्र हैं।

❖ **विशाखा** (1921):– इस नाटक के कथा सूत्र कल्हण कृत राजतरंगिणी के प्रथम तरंग से ग्रहण किए गए हैं। जयशंकर प्रसाद ने मूल कथा में कुछ परिवर्तन किया है। इस नाटक में तीन अंकों के कुल 17 दृश्यों में विभाजित किया गया है और इस नाटक में कश्मीर के राजा नरदेव ने नागों की सरदार सुश्रुवा नाग की सारी भूमि छीनकर बौद्ध मठों को दे देता है। साथ ही वह सुश्रुवा की कन्या चंद्र रेखा पर भी काम के वशीभूत होकर कुदृष्टि रखता है। जिसके कारण राजा नरदेव और नाग जाति में संघर्ष होता है। इस नाटक मे नरदेव महा पिंगल, सुश्रुवा , विशाख, प्रेमानंद, सत्यशील, चंद्ररेखा, इरावती आदि नाटक के पात्र हैं। प्रेमानंद और महापिंगल काल्पनिक पात्र है। नाटक के अंत में नरदेव सदमार्ग पर आ जाता है और इस नाटक में आततायी शासन में पिसती जनता को चित्रित किया गया है।

❖ **अजातशत्रु** (1922) :–प्रसाद जी द्वारा 1922 ई मेंलिखा गया और इस नाटक की कथावस्तु बुद्ध काल से संबंधित है। जयशंकर प्रसाद जी ने इस नाटक की भूमिका काफी लंबी लिखी जिसमें उन्होंने इतिहास की कई घटनाओं के विवरण दिये और उनको तीन अंकों के साथ कुल 28 दृश्यों को दृ श्याया गया है। नाटक का समस्त नाट्य व्यापार मगध कौशल और कौशाम्बी तीन स्थानों से संबंधित हैं। कथावस्तु तीन अंकों और 27 दृश्यों में विभाजित है। अजातशत्रु नाटक में पत्रों की संख्या काफी अधिक है, अअजातशत्रु, बिम्बिसार, उदयन, प्रसेनजीत विरुद्धक, गौतम बुद्ध, देव दत्त आदि प्रमुख इसके प्रमुख पात्र माने जाते हैं, जबकि छलना वासी, पद्मावती वासवदत्ता शक्ति मती, वाजिरा आदि प्रमुख स्त्री पात्र हैं। नाट्य शिल्प की दृष्टि से यह नाटक उत्तम है। इस नाटक में बौद्ध धर्म के अनुरूप करुणा, अहिंसा, प्रेम, क्षमा आदि भावों का महत्त्व स्थापित किया गया है। पूरे नाटक में कई प्रकार की

उथल पुथल वाली घटनाएं होती हैं और अंत में छलना ओर अजातशत्रु द्वारा ना बिम्बिसार से क्षमा यातना के बाद बिम्बिसार की मृत्यु पर नाटक समाप्त हो जाता है।

- **जनमेजय का नाग यज्ञ** (1923):–यह प्रसाद जी द्वारा 1923 ई में लिखा गया। इस नाटक की भूमिका में प्रसाद जी ने नाटक की कथावस्तु से जुड़े ऐतिहासिक तथ्यों का विवरण दिया है। इसमें विश्वबंधुत्व की भावना, प्रतिष्ठित की गयी। तीन अंकों व 31 दृश्यों में विभाजित इस नाटक में पात्रो की संख्या भी काफी देखने को मिलती है। इंद्रप्रस्थ सम्राट जन्मेजय, नागों का राजा तक्षक नाग सरदार वासुकी, पोरवों का पुरोहित कश्यप, कुलपति वेद आस्तिक सोमश्रवा , वेद व्यास आदि इसके प्रमुख पात्र हैं। जबकि नारी पात्रो में जनमेजय जी की रानी वपुष्टमा, वासुकी की बहन, ओर जरत्कारु की पत्नी सुरमा, तक्षक की कन्या मणि माला, वेद की पत्नी दामिनी और सोमश्रवा की पत्नी शीला आदि है। माणवक, त्रिविक्रम दामिनी, शीला जैसे कुछ पात्र काल्पनिक हैं, जबकि बाकी सारे पात्र ऐतिहासिक है।
- **कामना**:– नाटक 1923– 24 ई में लिखा एक प्रतीकात्मक नाटक है। इस नाटक को तीन अंकों व 22 दृश्यों में विभाजित किया गया है। इस नाटक के सारे पात्र मानवीय भाव के प्रतीक है। प्रसाद जी ने संतोष, विनोद, विलास, विवेक, शांति, दम, कामना, लालसा, करुणा, महत्त्व आकांक्षा आदि के मानवीय भावों को पात्र के रूप में चित्रित किया है।
- **स्कंदगुप्त** :–1928 में जयशंकर प्रसाद जी द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक है। इस नाटक का आधार भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग कहे जाने वाले गुप्त काल के पतन की घटनाएँ दर्शाई गई है। प्रसाद जी ने इस नाटक की लंबी भूमिका में गुप्त वंश का पूरा का पूरा विवरण दिया है। उस समय एक और तो विदेशी हूणों के बाहरी आक्रमण हो रहे थे जिससे समूचे मालवा और सौराष्ट्र प्रदेश में हलचल मची हुई थी, दूसरी ओर गुप्त राज परिवार में आंतरिक कलह भी। सता प्राप्ति की होड़ मची हुई थी। यह पांच अंकों में विभाजित इस नाटक का मुख्य पात्र स्कंदगुप्त है और गुप्त परिवार के नियम के मुताबिक बड़ा पुत्र स्कन्दगुप्त अपने पिता के बाद राज सिंहासन का उत्तराधिकारी हैं, किंतु वे माता अनंत देवी अपने पुत्र पूर गुप्त को राजा बनवाने के लिए अनेक षड्यंत्रकारी गतिविधि रचती है। पूरगुप्त सदैव मदिरा विलास में डूबा रहता है पारिवारिक षड़यंत्रों से त्रस्त स्कंदगुप्त में वीतराग की भावना पैदा हो जाती है। किन्तु बाहरी शक्ति के आक्रमण के समय वही राष्ट्र की रक्षा करता है और नाटक के अंत में गुप्तकाल के शासन को सुरक्षित रखकर वे छोटे भाई पू ंगुप्त को राज्य सौंप देता है। इस नाटक में पुरुषों में स्कंदगुप्त के अलावा मगध सम्राट कुमार गुप्त, कुमारगुप्त के भाई गोविंद गुप्त, पर्ण दत्त चक्र पालित, मालवा के राजा बंधुवर्मा और उसका भाई भीम वर्मा, सर्वनाग कुमारगुप्त का छोटा पुत्र पुर गुप्त, भटर्क, पृथ्वी सेन आदि प्रमुख पात्र हैं। जबकि स्त्रीपात्रों में कुमारगुप्त की बड़ी रानी देवकी, छोटी रानी अनंत देवी, बंधु वर्मा की पत्नी जयमाला, बहन देवसेना, भटार्क की माँ कमला, विजय, रामा मालिनी आदि हैं। नाट्य शिल्प की दृष्टि से स्कंदगुप्त की गिनती सपन नाटकों में की जाती है। जिसमें राष्ट्र प्रेम संबंधी और विरह वेदना संबंधी गीत काफी लोकप्रिय हुए थे।

- **एक घूंट नाटक** :–1928 में जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित एक एकांकी है, जिसमें प्रेम और आनंद के भावों की प्रतिष्ठा की गई है। इस नाटक में प्रकृति के विभिन्न रूपों का मानवीकरण किया गया है।
- **चंद्रगुप्त** :–1931 में जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध नाटकों में से एक है और यह प्रसाद के पूर्व नाटक कल्याणी परिणय का विस्तार है। चंद्रगुप्त नाटक का आधार भारतीय इतिहास का मौर्य काल है। नाटक के विस्तृत भूमिका में प्रसादी ने मौर्य वंश, चंद्रगुप्त के जीवन, सिकंदर और चंद्रगुप्त का आमना सामना, चंद्रगुप्त के नेतृत्व में यूनानी सेना की पराजित करना, सेना को पराजित करना, मगध में चंद्रगुप्त और उनके शासन में भारतवर्ष की स्थिति चाणक्य के संबंध में विस्तार से समझाया गया है और उनके संबंधों में ऐतिहासिक प्रमाण भी दिए हैं।ऐतिहासिक आधार लेते हुए इन नाटकों में जयशंकर प्रसाद ने कई काल्पनिक घटनाओं और चरित्रों की सृष्टि की है। चंद्रगुप्त और चाणक्य नाटक के प्रधान पात्र हैं। अन्य पात्रों में मालव का राजकुमार सिंहरण मगध सम्राट नन्द, मगध के अमात्य राक्षस और वररुचि मगध के मंत्री शकटार तक्षिला का राजकुमार और चन्द्र गुप्त नाटक में मुख्य तीन रूप से घटनाएं सिकंदर का विजयी बयान, राज नंद का अनुकूलन और सिल्यूकस का आक्रमण तीनों घटनाओं के केंद्र में चंद्रगुप्त है। वह अपने गुरु चाणक्य से दिशानिर्देशन, प्राप्तकर्ता व शपथ ला प्राप्त करता है। हिंदी के कई नाट्य निर्देशकों ने चंद्रगुप्त नाटक को सफलतापूर्वक मंच पर प्रस्तुत किया है। इन राजनीतिक घटनाओं के साथ चाणक्य, चंद्रगुप्त जैसे पात्रो का व्यक्तिगत जीवन भी नाटक में चित्रित हुआ है। और अंत में चंद्रगुप्त के राज्याभिषेक और कार्नेलिया के साथ विवाह और चाणक्य द्वारा वन गमन की सूचना पर नाटक समाप्त हो जाता है।
- **ध्रुवस्वामिनी** :–नाटक 1933 ई में जयशंकर प्रसाद का एक चर्चित नाटक स्त्रीप्रधान है। ऐतिहासिक घटनाक्रम का सहारा लेते हुए जयशंकर प्रसाद ने इस नाटक में विवाह विच्छेद की सामाजिक समस्या को उठाया है और पति के अयोग्य से होने की स्थिति में इस स्त्री के विवाह बंधन से मुक्ति का शास्त्र सम्मत समाधान भी प्रस्तुत किया है। नाटक की भूमिका में प्रसाद जी ने संस्कृत कवि विशाखादत के देवी चंद्रगुप्त का उल्लेख हैं, जिससे ध्रुवस्वामिनी नाटक की कथा के सूत्र ग्रहण किए गए हैं। ध्रुवस्वामिनी, चंद्रगुप्त, रामगुप्त,शकराज, मंदाकिनी, कोमा, शिखर स्वामी, पुरोहित आदि नाटक के प्रमुख पात्र हैं। ध्रुवस्वामिनी के माध्यम से अयोग्य पति के दुर्व्यवहार से त्रस्त नारी की विवस स्थिति को इस घटना से मनोवैज्ञानिक धरातल परचित्रित किया गया है।

जयशंकर प्रसाद के नाटकों की विशेषता है:–

जयशंकर प्रसाद ने जिसे समय नाटक लिखना शुरू किया, उसमें हिंदी नाटक की धारा अत्यंत क्षीण थी। नाट्य लेखन की जो शुरुआत भारतीय हिंदू हरिश्चंद्र ने की थी, वह धीरे धीरे मंद पड़ती जा रही थी। निम्न स्तर के मनोरंजन की प्रधानता वाले फारसी नाटक जनता की रुचि को भ्रष्ट कर चूके थे। ऐसे में समय में जयशंकर प्रसाद ने हिंदी नाटक को सवस्थ और साहित्यिक नाटकों के द्वारा। गति देने की कोशिश की। नाटो की प्रमुख विशेषताएं निम्न प्रकार से है।

कथावस्तुः–

- पात्र और चरित्र चित्रण
- भाषा तथा संवाद योजना
- देश का वातावरण
- अभिनयात्मकता
- इतिहास और कल्पना का समन्वय
- राष्ट्रीय– सांस्कृतिक चेतना
- गीतों की प्रधानता

निष्कर्ष :–

प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद ने हिंदी नाटक के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतेंदु युग के बाद हिंदी नाटकों की जो धारा मंद पड़ गई थी, परसाद जी ने गति प्रदान की। ध्रुवस्वामिनी ,चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त ,अजातशत्रु, जनमेजय का नाग यज्ञ ,राज्यश्री जैसे महत्वपूर्ण नाटकों की रचना कर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जयशंकर प्रसाद जी ने समय समय पर नाटक के संबंध में अपने विचारों को भी प्रकट किया। इतिहास को नाटकों की कथा वस्तु का आधार बनाते हुए उन नाटकों के माध्यम से युगीन मूल्यों की अभिव्यक्ति प्रसाद जी ने की है। यथाआवश्यक कल्पना का इस्तेमाल करते हुए प्रसाद जी ने अपने नाटकों में रोचकता और नाटकीयता का समावेश किया है। जयशंकर प्रसाद जीके नाटकों में सभी तरह के पात्र मिलते हैं। ये सभी पात्र मानवीय भूमि पर रचे गए हैं। जयशंकर प्रसाद मूलत कवि थे, इसलिए उनके नाटकों को संवादों की भाषा में काव्यात्मकता का गुण मिलता है। प्रसाद जी के सभी नाटक किसी न किसी उद्देश्य के लिए लिखे गए इतिहास के माध्यम से तत्कालीन युग की आवश्यकता के अनुरूप प्रसाद जीके नाटकों में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना, मानवतावाद, गांधीवादी मूल्यों। की प्रतिष्ठा देखने को मिलती है। जयशंकर प्रसाद के नाटक अपने कलेवर के कारण कई वर्षों तक मंचित नहीं हो पाए। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कई कल्पनाशील निर्देशकों ने उनके नाटकों में आवश्यक संशोधन करते हुए सफलतापूर्वक मंच प्रस्तुत किया। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जयशंकर प्रसाद ने हिंदी साहित्य को कई महत्वपूर्ण नाटक दिए हैं।